

---

# Shri Raghavendra Gurukarunasampadana Stotram

---

## श्रीराघवेन्द्रगुरुकरुणासम्पादनस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Raghavendra Gurukarunasampadana Stotram

File name : rAghavendragurukaruNASampAdanastotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev, stotra, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : Krishna Avadhutapandita Vedavyasacharya

Proofread by : Gopalakrishnan, PSA Easwaran

Description/comments : from Raghavendra Tantram

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 18, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीराघवेन्द्रगुरुकरुणासम्पादनस्तोत्रम्



श्री प्राप्त्यै प्रचुरतृषापिशाचकः स-  
न्नाजन्मप्रकटिततीर्थकाकभावः ।  
दारिद्र्यप्रियसुहृदं तथापि दात-  
र्मा पात्रे समितमुपेक्षसे क्व यामि ॥ १ ॥

राकेन्दुप्रतिममुखीमवेक्ष्य चित्तं  
लोलन्तीं शुनककुधीस्तदानुकूल्ये ।  
शंयुर्नाभवमनया तथापि भूय-  
श्रृङ्गालः स्वजनविरोधजापकीर्त्या ॥ २ ॥

घर्मातीं दिशि दिशि चारपाशचारं  
सञ्चर्यक्षणमपि विश्रमं न चापम् ।  
कापेयस्तदपि मलीमसे घनाशा-  
भारेण प्रतिगृहमेम्यकिञ्चनोऽपि ॥ ३ ॥ (गृहमाप्तकिञ्चनोऽपि)

वेदान्ते न किमपि साहसं मयाऽऽत्तं  
संसर्तुर्मम धिषणाभवच्छिलाभा ।  
श्रीलानां द्विजकक इत्यनादृतो वा  
पश्चाद्वा पुरत उतानुगादिकोऽहम् ॥ ४ ॥

दारा मे तिलकटु कल्पयन्ति चित्तं  
ब्रातीनो धनिकतयापि नापमर्थम् ।  
तस्मान्मामनुपधिकं सुपुत्रकं ते  
तातेष्टप्रद कुरु राघवेन्द्रतीर्थ ॥ ५ ॥

यं यं वा जनमहमाश्रये सुखाय  
प्रारब्धान्मम स स कर्मणो जहाति ।  
हृद्रोगः प्रपचति रूपमद्य तत्य-  
स्तं क्षिप्रं प्रशमया मां सुखीकुरु त्वम् ॥ ६ ॥

नर्नुत्तः प्रीतिपरमङ्गनाधनाशी

उष्णालुः सततमहं हिमेलुरेषः ।

किं कार्यमिह परसाधनान्युपायी- (परसाधनान्युपाची-)

कृत्ये त्वं गुरुवर मे गतिं प्रदेहि ॥ ७ ॥

मा रोदीरिति चिरदूनमानसं मा-

माश्वस्य प्रकटय मय्युदारभावम् ।

याचे त्वां यतिवर राघवेन्द्रतीर्था-

नन्याप्यां पितृबलतां त्वयाहमाप्तुम् ॥ ८ ॥

कृष्णाख्यः कविरवधूत ईशजूटी

संसर्पत्सुरसहिताभवाग्विलासः ।

स्तोत्रं श्रीगुरुवरपादयोर्वितन्व-


न्नापेदे सपदि तदिष्टपुत्रभावम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्कृष्णावधूतपण्डितकृतौ श्रीराघवेन्द्रतन्त्रे नवमपटले


गुरुकरुणासम्पादनस्तोत्रं नाम दशमोऽध्यायः सम्पूर्णः ।

Proofread by Gopalakrishnan, PSA Easwaran

---

——  
Shri Raghavendra Gurukarunasampadana Stotram

pdf was typeset on December 18, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

